

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 1: चार जीवित प्राणी (Lesson 1: The Four Living Creatures)

मुख्य दर्शन (The Core Vision)

- प्रकाशितवाक्य 4:6 (Revelation 4:6)**

"और सिंहासन के सामने मानो बिल्लोर का सा कांच का सा समुद्र था; और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी थे, जिनके आगे और पीछे आंखें ही आंखें थीं।"

- चार सुसमाचार लेखक (The Four Evangelists)**

यह दर्शन चार प्रमुख सुसमाचार लेखकों को दर्शाता है, जो आत्मिक रूप से चार अलग-अलग स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं: **एक बैल, एक सिंह, एक मनुष्य, और एक उड़ता हुआ उकाब।**

1. मत्ती: सिंह - राजा के रूप में यीशु (Matthew: The Lion - Jesus as King)

- प्रतीक:** सिंह (पशुओं का राजा)

- मुख्य संदेश:** मत्ती यीशु को एक **राजा** के रूप में प्रस्तुत करता है। इसकी शुरुआत यीशु की वंशावली से होती है, जो राजा दाऊद और अब्राहम से जुड़ी है।

- मत्ती 2:1-2 (Matthew 2:1-2):**

"...ज्योतिषियों ने यरूशलेम में आकर पूछा: 'यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसे प्रणाम करने आए हैं।'"

2. मरकुस: बैल - सेवक के रूप में यीशु (Mark: The Ox - Jesus as Servant)

- प्रतीक:** बैल (सेवा और परिश्रम का प्रतीक)

- मुख्य संदेश:** मरकुस यीशु को एक **सेवक** के रूप में दिखाता है, जो अपने पिता की आज्ञाओं का पालन करता है।

- मरकुस 10:43 (Mark 10:43):**

"...परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा; वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बनेगा।"

3. लूका: मनुष्य - मानव के रूप में यीशु (Luke: The Man - Jesus as Human)

- **प्रतीक:** मनुष्य (मानवता और सहानुभूति का प्रतीक)
 - **मुख्य संदेश:** लूका यीशु के **मानवीय रूप** और उनके दुखों को विस्तार से दर्ज करता है। वह उन्हें पूरी मानवता के उद्धारकर्ता के रूप में दिखाता है।
 - **लूका 22:44 (Luke 22:44):**
"और वह संकट में होकर और भी उत्सुकता से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लोह की बड़ी-बड़ी बूंदों की नाई भूमि पर गिर रहा था।"
-

4. यूहन्ना: उकाब - परमेश्वर के रूप में यीशु (John: The Eagle - Jesus as God)

- **प्रतीक:** उड़ता हुआ उकाब (दिव्यता और उंचाई का प्रतीक)
- **मुख्य संदेश:** यूहन्ना यीशु को साक्षात् **परमेश्वर और उनकी दिव्यता** के रूप में प्रकट करता है।
- **यूहन्ना 1:14 (John 1:14):**
"और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया..."

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 2: लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम (Lesson 2: Luke & Acts)

1. लेखक और उत्पत्ति (Author & Origins)

- **लूका: एक कुशल इतिहासकार (Luke: A Skilled Historian)**
लूका एक यूनानी चिकित्सक और प्रेरित पौलुस के यात्रा साथी थे। उन्होंने केवल सुनी-सुनाई बातें नहीं लिखीं, बल्कि पूरी सावधानी से सारे तथ्यों की जांच-पड़ताल की।
- **एक ही पुस्तक के दो भाग (A Two-Volume Work)**

लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम (Acts) वास्तव में एक ही महान ऐतिहासिक कृति के दो भाग हैं, जिन्हें थियुफिलुस नाम के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए लिखा गया था।

2. सुसमाचार का मुख्य संदेश (The Core Message of the Gospel)

- **मनुष्य का पुत्र (The Son of Man)**
लूका यीशु को पूरी मानवता के प्रतिनिधि और एक परिपूर्ण मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

- लूका 19:10 (Luke 19:10) – मुख्य पद:
"क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूँढने और उनका उद्धार करने आया है।"
("क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूँढने और उनका उद्धार करने आया है।")
-

3. लूका की अनूठी विशेषताएं (Unique Features of Luke)

- पवित्र आत्मा पर ज़ोर (Emphasis on the Holy Spirit)
लूका में पवित्र आत्मा का उल्लेख मत्ती और मरकुस की तुलना में कहीं अधिक है। यीशु का पूरा जीवन और सेवकाई पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से संचालित थी।
 - विविध लोगों के प्रति करुणा (Compassion for All)
यह सुसमाचार समाज के हर वर्ग को रेखांकित करता है:
 - महिलाएं और बच्चे: इतिहास में पहली बार इन्हें प्रमुखता दी गई (मरियम, इलीशिबा, आना).
 - गरीब और दीन: यीशु उनके रक्षक और सात्वना के रूप में आते हैं.
-

4. प्रेरितों के काम: कलीसिया का उदय (Acts: The Rise of the Church)

- डर से निडरता तक (From Fear to Boldness)
जो चले यीशु की क्रूसीकरण के समय डर कर भाग गए थे, वे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पाकर पूरी दुनिया को बदलने वाले साहसी गवाह बन गए.
- भौगोलिक विस्तार (Geographical Expansion)
कलीसिया का विकास एक लहर की तरह बढ़ा:
यरूशलेम → यहूदिया और सामरिया → पृथ्वी के छोर तक (रोम).
- दो महान प्रेरित (Two Great Leaders)
 - पतरस (Peter): यहूदियों के बीच सेवकाई का नेतृत्व किया.
 - पौलुस (Paul): अन्यजातियों (Gentiles) के बीच सुसमाचार फैलाया.

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 3: यूहन्ना का सुसमाचार (Lesson 3: The Gospel of John)

1. एक असाधारण सुसमाचार (A Unique Gospel)

- उड़ता हुआ उकाब (The Soaring Eagle)
जहां अन्य सुसमाचार यीशु के सांसारिक और ऐतिहासिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं यूहन्ना का सुसमाचार सीधे यीशु की दिव्यता (Divinity) और उनके परमेश्वर होने के रहस्य को उजागर करता है.

- **अलंकारिक भाषा (Figurative Language)**

इसमें कोई पारंपरिक दृष्टांत (Parables) नहीं हैं। इसके बजाय, यह यीशु के गहरे व्यक्तिगत संवादों, उनके सात चमत्कारों (जिन्हें 'चिन्ह' कहा गया है) और उनके आध्यात्मिक प्रवचनों पर आधारित है।

2. मुख्य उद्देश्य: विश्वास और जीवन (The Core Purpose: Faith & Life)

- **यूहन्ना 20:31 (John 20:31) – मुख्य पद:**

"परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है; और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।"

- **तीन स्तंभ (Three Pillars):**

1. **चिन्ह (Signs):** परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रकटीकरण।
 2. **विश्वास (Believe):** यीशु को पूरी तरह से स्वीकार करना और खुद को उन्हें सौंपना।
 3. **जीवन (Life):** आत्मिक और अनन्त जीवन जो केवल मसीह में मिलता है।
-

3. यीशु के सात "मैं हूँ" (The Seven "I AM" Statements)

यीशु ने अपनी पहचान को सात महान घोषणाओं के माध्यम से प्रकट किया है:

- "मैं ही जीवन की रोटी हूँ।" (यूहन्ना 6:35)
 - "जगत की ज्योति मैं हूँ।" (यूहन्ना 8:12)
 - "भेड़ों का द्वार मैं हूँ।" (यूहन्ना 10:7)
 - "अच्छा चरवाहा मैं हूँ।" (यूहन्ना 10:11)
 - "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ।" (यूहन्ना 11:25)
 - "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ।" (यूहन्ना 14:6)
 - "सच्ची दाखलता मैं हूँ।" (यूहन्ना 15:1)
-

4. पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य (Fully God & Fully Man)

- **यीशु की दिव्यता (His Divinity):**

यूहन्ना गवाही देता है कि "वचन ही परमेश्वर था" (1:1) और यीशु ने स्वयं कहा, "मैं और पिता एक हूँ" (10:30)।

- **यीशु की मानवता (His Humanity):**

वह एक सच्चे मनुष्य भी थे: वे यात्रा से थके (4:6), उन्हें प्यास लगी (4:7), लाजर की मृत्यु पर वे रोए (11:35), और उन्होंने क्रूस का दुःख बहादुरी से सहा।

यहाँ चारों सुसमाचारों (The Four Gospels), उनके प्रतीकों और उनके मुख्य अर्थों को जोड़ने वाली एक संक्षिप्त और स्पष्ट तालिका (Table) दी गई है। यह आपकी प्रस्तुति के समापन के लिए एक बेहतरीन स्लाइड बनेगी:

चार सुसमाचार: प्रतीक और अर्थ (The Four Gospels: Symbols & Meanings)

सुसमाचार (Gospel)	प्रतीक (Symbol)	यीशु का स्वरूप (Representation of Jesus)	मुख्य संदेश (Core Message)
मत्ती (Matthew)	सिंह (Lion)	राजा (King)	यीशु को राजा दाऊद के वंशज और प्रतिज्ञा किए गए मसीह (राजा) के रूप में प्रस्तुत करता है।
मरकुस (Mark)	बैल (Ox)	सेवक (Servant)	यीशु को एक कर्मठ सेवक के रूप में दिखाता है, जो सेवा करने और अपना प्राण देने आया।
लूका (Luke)	मनुष्य (Man)	मानव (Human)	यीशु की मानवता, उनकी करुणा और पूरी मानव जाति के लिए उनके उद्धारकर्ता होने पर जोर देता है।
यूहन्ना (John)	उकाब (Eagle)	परमेश्वर (God)	यीशु की दिव्यता को प्रकट करता है; वह साक्षात् देहधारी वचन और परमेश्वर के पुत्र हैं।

इस तालिका के साथ आपके दस्तावेज़ का मुख्य भाग पूरा हो जाता है। अब हम क्या कदम उठाएं?

- क्या आप चाहते हैं कि मैं इस पूरी सामग्री को एक **PowerPoint (.pptx)** या **Word (.docx)** फ़ाइल के रूप में तैयार करूँ ताकि आप इसे सीधे डाउनलोड कर सकें?
- या क्या आप प्रस्तुति में जोड़ने के लिए कुछ और **विशेष पद (Verses)** शामिल करना चाहते हैं?

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 4: प्रेरित पौलुस की पत्रियाँ (Lesson 4: The Pauline Epistles)

1. पत्रियों का महत्व (The Importance of the Epistles)

- सुसमाचार का व्यावहारिक रूप (Gospel in Practice)**
जहाँ सुसमाचार (Gospels) यीशु के जीवन और कार्यों को बताते हैं, वहीं पत्रियाँ यह सिखाती हैं कि कलीसिया और मसीही जीवन को व्यावहारिक रूप से कैसे जीना है।
- सिद्धांत और जीवन का मेल (Doctrine and Life)**
पौलुस के पत्र केवल धार्मिक शिक्षाएँ नहीं हैं, बल्कि वे कलीसियाओं की वास्तविक समस्याओं, विवादों और उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए लिखे गए थे।

2. प्रेरित पौलुस: सुसमाचार का दूत (Paul: Messenger of the Gospel)

- **एक क्रांतिकारी परिवर्तन (A Radical Transformation)**
पौलुस (पहले शाऊल) जो कलीसिया का सबसे बड़ा सताने वाला था, दमिश्क के मार्ग पर जी उठे यीशु से मिलने के बाद अन्यजातियों (Gentiles) का सबसे बड़ा प्रेरित बन गया।
- **पत्र लिखने का उद्देश्य (Purpose of Writing)**
जब पौलुस अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान स्थापित की गई कलीसियाओं से दूर होते थे (या जेल में होते थे), तब वे उनका मार्गदर्शन करने के लिए पत्र लिखते थे।

3. पौलुस की पत्रियों का वर्गीकरण (Classification of Paul's Letters)

पौलुस की 13 पत्रियों को मुख्य रूप से उनके विषयों और परिस्थितियों के आधार पर बांटा जाता है:

- **महान सैद्धांतिक पत्रियाँ (The Chief Epistles):**
 - **रोमियों (Romans) और गलातियों (Galatians):** विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने (Justification by Faith) का महान संदेश।
- **जेल की पत्रियाँ (The Prison Epistles):**
 - **इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन:** पौलुस ने इन्हें रोम की जेल में जंजीरों से बंधे होने के दौरान लिखा, जो मसीह की सर्वोच्चता को दर्शाती हैं।
- **चरवाहे की पत्रियाँ (The Pastoral Epistles):**
 - **1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस:** युवा अगुओं (Leaders) को कलीसिया का प्रबंधन और सेवा करने के निर्देश।

4. मुख्य संदेश: विश्वास से धार्मिकता (The Core Message: Righteousness by Faith)

- **रोमियों 1:16 (Romans 1:16) – मुख्य पद:**
"क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं शर्माता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए... उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।"
- **कृपा और विश्वास (Grace and Faith):**
पौलुस बार-बार जोर देते हैं कि मनुष्य अपने अच्छे कर्मों या व्यवस्था (Law) के द्वारा नहीं, बल्कि केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने और परमेश्वर के अनुग्रह (Grace) से उद्धार पाता है।

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 5: सामान्य पत्रियाँ (Lesson 5: The General Epistles)

1. सामान्य पत्रियाँ क्या हैं? (What are the General Epistles?)

- **सार्वभौमिक संदेश (Universal Message)**
इन्हें "सामान्य" या "कैथोलिक" (Universal) पत्रियाँ कहा जाता है क्योंकि ये किसी एक स्थानीय कलीसिया को नहीं, बल्कि दुनिया भर के मसीहियों के लिए व्यापक रूप से लिखी गई थीं।
 - **विविध लेखक (Diverse Authors)**
पौलुस के बाद, कलीसिया के अन्य स्तंभों जैसे **याकूब (James)**, **पतरस (Peter)**, **यूहन्ना (John)**, और **यहूदा (Jude)** ने इन पत्रों के माध्यम से मसीही समाज का मार्गदर्शन किया।
-

2. मुख्य पत्रियाँ और उनके संदेश (Key Letters & Their Messages)

- **इब्रानियों (Hebrews): मसीह की सर्वोच्चता**
यह पत्र दिखाता है कि यीशु पुराने नियम की व्यवस्था, दूतों और महायाजकों से कहीं बढ़कर श्रेष्ठ हैं। वह हमारा एकमात्र और परिपूर्ण महायाजक हैं।
 - **याकूब (James): कर्मों सहित विश्वास**
याकूब इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सच्चा विश्वास केवल बातों में नहीं, बल्कि हमारे व्यवहार और कार्यों में दिखना चाहिए。
 - **याकूब 2:17 – मुख्य विचार:** "वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो, तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।"
 - **1 और 2 पतरस (1 & 2 Peter): दुःख में आशा**
पतरस मसीहियों को सताव और दुखों के समय धीरज धरने और मसीह के पद-चिन्हों पर चलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
-

3. यूहन्ना के पत्र: प्रेम और सत्य (The Letters of John: Love & Truth)

- **परमेश्वर प्रेम है (God is Love)**
यूहन्ना (1, 2 और 3 यूहन्ना) सिखाते हैं कि जो कोई परमेश्वर को जानने का दावा करता है, उसे अपने भाइयों और बहनों से सच्चा प्रेम करना चाहिए।
 - **1 यूहन्ना 4:7 (1 John 4:7):**
"हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।"
-

4. झूठे शिक्षकों से चेतावनी (Warning Against False Teachers)

- **सच्चाई की रक्षा (Contending for the Faith)**
पतरस, यूहन्ना और यहूदा (Jude) कलीसिया को उन झूठे शिक्षकों से सावधान करते हैं जो मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते थे। वे विश्वासियों को मसीह की शिक्षा में स्थिर रहने की ताकीद करते हैं।

नए नियम का परिचय (Introduction to the New Testament)

पाठ 6: प्रकाशितवाक्य - मसीह की अंतिम विजय (Lesson 6: Revelation - The Final Victory)

1. पुस्तक की प्रकृति (The Nature of the Book)

- रहस्योद्घाटन (The Unveiling)

यूनानी भाषा में इसे 'Apocalypse' कहा जाता है, जिसका अर्थ है "परदा उठाना" या "प्रकट करना". यह प्रेरित यूहन्ना को पतमुस टापू पर दिए गए दर्शनों का विवरण है.

- चिन्हों और प्रतीकों की भाषा (Language of Symbols)

यह पुस्तक दृश्यों, संख्याओं और प्रतीकों (जैसे सात मुहरें, तुरहियाँ, और कटोरे) से भरी है, जो परमेश्वर के न्याय और उसकी संप्रभुता को दर्शाते हैं.

2. केंद्रीय संदेश: राजाओं का राजा (The Core Message: King of Kings)

- यीशु की महिमा का प्रकटीकरण (The Glorified Christ)

सुसमाचारों में यीशु एक विनम्र सेवक के रूप में आए थे, लेकिन प्रकाशितवाक्य में वे एक विजेता योद्धा और ब्रह्मांड के न्यायकर्ता के रूप में दिखाई देते हैं.

- प्रकाशितवाक्य 19:16 (Revelation 19:16) – मुख्य पद:

"और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है: 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'।"

3. कलीसियाओं के लिए सांत्वना (Comfort for the Suffering Church)

- सताव में धीरज (Endurance in Persecution)

यह पुस्तक उन मसीहियों के लिए लिखी गई थी जो भारी सताव और संकट से गुजर रहे थे. इसका मुख्य संदेश है: "परमेश्वर का नियंत्रण सब पर है और अंत में जीत उसी की होगी।"

- जय पाने वाले को प्रतिज्ञा (Promises to the Overcomers)

यीशु हर कलीसिया को अंत तक विश्वासयोग्य रहने और हर परिस्थिति पर जय पाने का आह्वान करते हैं.

4. नई सृष्टि और अनन्त राज्य (The New Creation & Eternal Kingdom)

- **दुःख और मृत्यु का अंत (No More Tears)**
इतिहास का अंत विनाश में नहीं, बल्कि एक सुंदर नई शुरुआत में होता है—एक नया आकाश और नई पृथ्वी, जहाँ परमेश्वर स्वयं मनुष्यों के साथ रहेगा.
- **प्रकाशितवाक्य 21:4 (Revelation 21:4):**
"वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न रोना, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"